ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

भारत की सांस्कृतिक विरासत
Cultural Heritage of India

Paper Submission: 12/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

कमलेश कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
रा0स्व0ग्रा0उ0पी0जी0 कालेज,
पुखरायां
कानपुर देहात उ०प्र० भारत

सारांश

भारतीय संस्कृति के संश्लेषण एवं समन्वय का इतिहास बहुचर्चित अनुमान के अनुसार पांच हजार वर्षो की अवधि से माना जाता है। भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला में विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है। मानव में ही वह अद्भुत शक्ति व क्षमता मौजूद है कि वह संस्कृति का निर्माता कहलाने का अधिकारी है। मानव इसलिये मानव हे कि उसके पास संस्कृति है। संस्कृति के अभाव में मानव को पशु से श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। मानव शास्त्र में संस्कृति शब्द का प्रयोग भिन्न अर्थो में हुआ है। मजूमदार एवं मदान ने लोगों के जीने के ढंग को ही संस्कृति मानते है। भारत विभिन्नताओं का देश है। इस महान देश की विविधता जीवन के हर पहलू में दृष्टिगत होती है, वस्तुतः भारत की संस्कृति विविधताओं और अनेकता के विभिन्न बिन्दुओं का समुच्चय प्रतीत होती है, जाहिर है कि यह विविधता भाषा, साहित्य, लिपि के प्रचलन के स्तर पर भी व्याप्त है। भारत की संस्कृतिआत्म ज्ञान पर केन्द्रित है। यहां पर संकीर्ण आचरण की परम्परा कभी भी विद्यमान नहीं रही है। ''जियो और जीने दो'' की संस्कृति वाले भारत में सहिष्णुता की जड़े बहुत गहरी है। ऐसा नहीं है कि इस पर प्रहार नहीं हुये हो। कभी विदेशी तो कभी हमारे बीच के लोगों ने धर्मांधता, संकीर्णता, क्षेत्रीयता के आधार पर संस्कृति की जड़ पर कुठाराघात किया लेकिन वे सदैव पराजित हुये। इस प्रकार यदि हम सांस्कृतिक समग्रता पर विचार करें तो हमें सांस्कृतिक प्रतिमान क्षेत्रीय एवं भाषायी तथा धार्मिक विविधता के कारण भारतीय संस्कृति में अत्यधिक वैविध्य विद्यमान दिखाई देता है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण है, विभिन्न धर्म जाति और क्षेत्र अपनी परम्परा अपनी संस्कृति का पालन करते है, अतः कला वास्तुशिल्प, नृत्य शैली, नाट्य शैली संगीत इत्यादि में विभिन्नता पायी जाती है, लेकिन इसके बावजूद भी हम लोग भारतीय है और राष्ट्रवाद के नाम पर एक हो जाते है, जो कि हमारी भारतीयता को और हमारी सांस्कृतिक विकास को अक्षुण्य बनाये रखने में सहायक सिद्ध होती है।

The history of synthesis and coordination of Indian culture is believed to be from a period of five thousand years according to the much-anticipated estimate. Indian culture and civilization is the most ancient and rich culture and civilization in the world. It is considered the mother of all cultures of the world. The science of living or the field of politics has always been a special place in Indian culture. The amazing power and potential that exists in humans is that it is entitled to be called the creator of culture. Human is human because he has culture. In the absence of culture, humans cannot be called superior to animals. The word culture has been used in a different sense in anthropology. Mazumdar and Madan considered the way people live as culture. India is a country of diversity. The diversity of this great country is visible in every aspect of life, in fact the culture of India seems to be a set of different points of diversity and diversity, obviously this diversity also prevails at the level of circulation of language, literature, script. The culture of India is centered on self-knowledge. The tradition of narrow conduct has never existed here. India has a deep roots of tolerance in a culture of "live and let live". It is not that it has not been attacked. Sometimes foreigners and sometimes people among us attacked the root of culture on the basis of bigotry, parochialism, regionalism, but they were always defeated. In this way, if we consider cultural totality, then we see a lot of diversity in Indian culture due to cultural paradigm, regional and linguistic and religious diversity. In fact, Indian culture is a mixture of different cultures, different religions, castes and regions follow their own traditions, so art is different in architecture, dance style, theatrical style music, etc. But even then we are Indian and nationalism Let's unite in the name of, which is helpful in keeping our Indianness and our cultural development intact.

मुख्य शब्द : संश्लेषण एवं समन्वय, समुच्चय,वैविध्य, गंधर्वविवाह, पंचशील सिद्धान्त, अक्षुण्य
Synthesis and Coordination, Aggregates, Diversity, Gandharvivah, Panchsheel Theory, Intact

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का इतिहास अति प्राचीन रहा है, इसकी अवधारणा को किसी एक परिभाषा द्वारा विवेचित नहीं किया जा सकता, संस्कृति का सामान्य अर्थ सीखे हुये व्यवहार से लाया जाता है। संस्कृति की प्रथम वैज्ञानिक व्याख्या एडवर्ड टायलर ने प्रस्तुत की इन्होंने सभ्यता व संस्कृति में कोई अन्तर नहीं किया। टायलर के अनुसार संस्कृति वह जटिल समग्रता है, जिसमें इस विश्वास कला के आधार पर प्रथा और ऐसी अन्य आदतों एवं क्षमताओं का समावेश होता है जिन्हें मनुष्य समाज होने के नाते प्राप्त करता है।

भारतीय समाज और संस्कृति अति प्राचीन है लेकिन इनके संलेषण की प्रकृया को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से सिंधु घाटी की सभ्यता से ही देखा जा सकता है। सिन्धु घाटी सभ्यता में भी लोग गाय, भैंस, कुत्ते, बिल्ली, हाथी आदि पालतू जानवर पालते थे। सिंधुवासी सोना, चांदी, ताबें का ज्ञान रखते थे। पशु पक्षियों की पूजा करते थे। बहुदेव वाद के साथ ही ईश्वरीय सत्ता में भी विश्वास रखते थे। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय सांस्कृतिक समन्वय में सिन्धुघाटी की सभ्यता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक संस्कृति के शिष्य में आर0एस0 मजूमदार ने अपनी पुस्तक एन एडवान्स हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (1970) में लिखा है– ऊपरी तौर पर दोनों में बहुत अंतर है वैदिक आर्य ग्रामीण थे जबकि सिंधु घाटी सभ्यता के अनुसार वहाँ विकसित शहरी जीवन की सुविधाएँ थी। वैदिक आयु सम्भवतः लोहे और रक्षा शास्त्रों के बारे में जानते थे.....।

वैदिक युग में स्त्रियों को हर क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने की छूट थी। वैदिक काल में अपाला घोषा, मैत्रेयी तथा गार्गी जैसे महिलाएं हुयी है। स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने, वेद का पाठ करने का अधिकार प्राप्त था। इन लोगों ने कई प्रकार के भजनों की भी रचना की। वे अपने पतियों के साथ यज्ञ में भाग भी लेती थी।

किसी भी प्रकार का जातिगत भेदभाव नहीं था। स्वयंवर की (शक्ति परीक्षण के बाद कन्यावर का चुनाव करती थी) तथा गांधर्व विवाह का भी प्रचलन था। किन्तु यदि हम उत्तर वैदिक समाज की ओर ध्यान दे तो सामाजिक स्थिति में काफी कुछ बदलाव देखने को मिलते हैं। स्त्री से सम्पत्ति के स्वामित्व के अधिकार को छीन लिया गया, विधवाएं पुर्नविवाह नहीं कर सकती थी। धीरे–धीरे पर्दा प्रथा का भी प्रचलन बढ़ने लगा। सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ भी इसी काल में उभरी। जाति प्रथा का आविर्भाव भी बहुत तेजी से इसी काल में हुआ। व्यवसाय जो अब तक कर्म आधारित था वह अब जातिगत आधार पर निश्चित किये जाने लगे। इसीकाल में त्रि–वर्ण का Concept समाप्त होकर 4 वर्णों की स्थापना बड़ी ही कड़ाई के साथ स्थापित की गयी। जबकि इसके पहले गीता में भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं ही कहा है चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। किन्तु इस काल तक आते आते यह सिद्धान्त नकार दिया गया और जातिगत व्यवसाय अपनाये जाने लगे। स्त्रियों की स्थिति बंद से बदतर हो गयी उन्हें घर के अन्दर रहने पर मजबूर किया जाने लगा और पर्दाप्रथा का कड़ाई से पालन किया जाने लगा। इस समय विधवाओं की स्थिति भी खराब हो गयी उन्हें अशुभ माना जाने लगा। तथा सभी प्रकार के मांगलिक कार्यो से वंचित कर दिया गया। उपरोक्त सामाजिक परिवर्तनों के बाद शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन आने लगे धीरे–धीरे एक वर्ग विशेष का शिक्षा व्यवस्था पर आधिपत्य हो गया, जिसके फलस्वरूप हमारी शिक्षा और संस्कृति रूढ़िवादी और औपचारिक वर्ग विशेष के लिये सीमित रह गयी।

ऐसी विषम परिस्थितियों से त्रस्त भारतीय सामाजिक व्यवस्था क्षत–विक्षत होकर कराहने लगी और ऐसी स्थिति में देश को एक नई दिशा देने के लिये एक महापुरुष का जन्म हुआ जिनका नाम था गौतम बुद्ध (563–483ई0पू0)। आपने बौद्ध धर्म की स्थापना की और सारे कर्मकाण्डों का खण्डन किया तथा समाज में जात–पात के भेद को समाप्त करने का प्रयास किया।

वह आत्मा की अमरता को तो नकार देते हैं किन्तु पुर्नजन्म में भी विश्वास करते थे और परम्परागत पूजा पद्धति का खण्डन किया और समाज को एक नयी दिशा प्रदान की। इन्हीं के समकालीन महावीर सवामी (599 से 527ई0पू0) जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर के रूप में हुए। उन्होंने वेद की परम्परा को खण्डित किया। उन्होंने दुनिया को सत्य, अहिंसा तथा त्याग जैसे उपदेशों के माध्यम से सही राह दिखाने की सफल कोशिश की। महावीर स्वामी ने अपने पंचशील सिद्धान्त के द्वारा समाज को एक नयी दिशा प्रदान की। इस प्रकार यदि देखा जाये तो छठी शताब्दी ई0पू0 में बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उदय तत्कालीन परिस्थितियों की मांग थी। दोनों ही धर्मो ने भारतीय सांस्कृतिक जीवन को काफी प्रभावित किया और देश को सही दिशा प्रदान की।

महात्माबुद्ध के आत्मा का दृष्टांत क्षणिक विद्वानों का प्रवाह है वे नित्य आत्मा को नहीं मानते, नित्य स्थायी, वे अध्यात्मवादी हैं। भारतीय संस्कृति के अन्य क्षेत्रों में विविधता लाने में बौद्ध धर्म का महान योगदान रहा है। इस धर्म ने ''अहिंसा परमोधर्मः'' के आदर्श को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बनाया। यह उन परस्थितियों में हुआ जब सत्य, सेवा, त्याग, परोपकार, अहिंसा आदि आदर्शो का लोप सा हो गया था। इन्होंने जातीय बन्धनों को तोड़ा, अन्धविश्वासों को दूर कर सम्पूर्ण भारत को समानता तथा एकरूपता प्रदान की।

इस्लामिक संस्कृति के विषय में डा0 तारा चन्द लिखा है कि भारत का सम्पर्क अरब जगत से अत्यन्त प्राचीन है। इस्लामिक संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति के समन्वय में सभी क्षेत्रों कला, साहित्य, रीति–रिवाज, जाति प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह और सती प्रथा आदि पर भी पड़ा। यहां पर यदि सांस्कृतिक समन्वय की बात

की जाये तो उर्दू भाषा का विकास हिंदी और फारसी भाषाओं के समिश्रण से हुआ। संगीत की बहुलता में पारसी संगीत के प्रभाव से हिन्दुस्तान संगीत में ख्यालशैली, तबला और सितार वाद्य जैसे यंत्रो का विकास हुआ। भारत की वास्तुकला में अति विशाल गुम्बद, दरवाजे और मीनारे बनने लगी, हिंदू धर्म इस्लाम के एकेश्वरवाद का भी प्रभाव पड़ा।

प्रेम और समानता का अत्यधिक प्रार्दुभाव भारत में इस्लामिक संस्कृति के प्रभाव को दर्शाता है। इस्लामी संस्कृति के प्रभाव से ही भारत में तत्कालीन संत रैदास, कबीर, ज्ञानदेव, रमानन्द आदि ने अद्वैतवाद का प्रचार किया। इन लोगों के प्रभाव से तुलसीदास, सूरदास, चैतन्य महाप्रभु मीरां आदि के भक्ति आन्दोलन को भी काफी बल मिला। जिससे हिन्दी साहित्य को और शक्ति प्राप्त हुई। मलिक मु0 जायसी, अब्दुल रहीम खान खाना जैसे मुसलमान कवियों ने उच्च कोटि की रचनाएं लिखकर हिन्दी साहित्य को और भी सम्वृद्धि प्रदान की। भारतीय संस्कृति के संश्लेषण में यदि इस्लाम को रखकर देखा जाय तो मुस्लिम सूफी सिलसिले जिनके संतों ने विभिन्न समुदायों में भाई–चारा पनपाने का सफल प्रयास किये जिन्होंने सुहरावर्दी और सुलहे कुल जैसी प्रकृया को आगे ले जाने में सफलता प्राप्त की।

अध्ययन के उद्देश्य

भारतीय सांस्कृतिक विरासत का समग्र अवलोकन करने पर हम पातें हैं कि हमारी सांस्कृतिक विरासत आने वाली पीढ़ी को नई व स्पष्ट दिशा प्रदान कर सकती है। प्रस्तुत लेख के माध्यम से देश के भावी पीढ़ी को एकता, सहिष्णुता, सामाजिक समरसता तथा सांस्कृतिक समन्वय हेतु प्रेरित करना हमारा प्रमुख उद्देश्य है। इस निबन्ध में हमने सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक मूल्यों का संरक्षण भाई चारा को बनाये रखने को प्रमुखता दी है। अपसंस्कृति तथा नैतिकमूल्यों के क्षरण को आज के वर्तमान सामाजिक परिपेक्ष्य में अपनी सांस्कृतिक विरासत के द्वारा हम कैसे रोक पाते है इस लेख मे इस बात का विशेष ध्यान दिया गया है। भारत विविधताओं का देश है, यहाँ भिन्न–भिन्न भाषा, भेषभूषा, अनेको धर्म जातियों व प्रजातियां एक साथ निवास करती है, किन्तु इन सबके बावजूद राष्ट्रीयता के नामपर हमसब एक हो जाते है, और हमसब मां भारती के अमर सपूत है, यह संस्कार हमारी सांस्कृतिक विरासत का ही परिणाम है।

साहित्यालोकन

भारत की सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिये स्वामी विवेकानन्द के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है, उनकी भारतीय के प्रति सोच को कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस कथन से समझा जा सकता है जिसमें उन्होंने कहा था–''यदि आप भारत को समझना चाहते है तो स्वामी विवेकानन्द को सम्पूर्णतः पढ़ लीजिये।'' विवेकानन्द के सारे चिन्तन का केन्द्र बिन्दु राष्ट्र और राष्ट्रवाद था। दीन हीन जनों की सेवा ही को वह सच्ची ईश्वर की सेवा मानते थे। सेवा की इस भावना को विवेकानन्द जी ने अपने शब्दों में व्यक्त करते हुये कहा कि भले ही मुझे बार–बार जन्म लेना पड़ा लेकिन मैं चाहूँगा कि मैं उस एकमात्र ईश्वर की सेवा कर सका, जो असंख्य आत्माओं का ही विस्तार है, वह मेरी भावना से सभी जातियों, वर्गो, धर्मो के निर्धनों में बसता है, उनकी सेवा ही मेरा अभीष्ट है।'' इससे यह परिलक्षित होता है कि उन्हें अपने निजी मुक्ति से बढ़कर राष्ट्रसेवा को ही अपना लक्ष्य बनाया। इसी सांस्कृतिक प्रवाह में एक नाम आता है गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर। वे एक महान कवि होने के साथ–साथ, मानववादी, देश भक्त, उपन्यासकार, कहानीकार, कवि, लेखक, शिक्षाविद और दर्शनशास्त्री भी थे। वे देश के सांसकृतिक दूत भी थे, जिन्होंने पूरी दुनिया में भारतीय संस्कृति के ज्ञान को फैलाया, उन्होंने ही देश को हमारा राष्ट्रगान ''जनगण मन'' दिया है। गीताजंली, अमार सोनार बांग्ला, घेर बेर रवीन्द्र संगीत आदि उनकी रचनाएँ है। गीतांजली के लिये उन्हें 1913 में नोबेल पुरस्कार दिया गया, वो पहले भारतीय और पहले एशियायी थे जिनको यह सम्मान प्राप्त हुआ। भारतीय संस्कृत और सभ्यता की बात जहाँ आती है बगैर गांधी जी उसे सदैव अपूर्ण ही माना जायेगा। ''भारतीय सभ्यता और संस्कृति'' हमारे राष्ट्रपिता द्वारा लिखा गया एक निबन्ध है, इसमें वे भारतीय सभ्यता की तुलना पश्चिमी सभ्यता से करते है, और भारतीय सभ्यता को इन सभी से बेहतर पाते है। भारतीय संस्कृति को केन्द्र मानकर यदि गांधी जी को देखा जाय तो उनका जीवन दर्शन महान भारतीय संस्कृति एवं परम्परा का दर्पण है।

सुभाषचन्द्र बोस के अनुसार, "स्वामी विवेकानन्द का धर्म राष्ट्रीयता को उत्तेजना देने वाला धर्म था। उनके उद्गारों से लोगों में आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के भाव जगे हैं।" स्वामी जी की शिक्षाओं के जबरदस्त राजनीतिक परिणाम निकले। उनके प्रभावशाली निर्देशन में हिन्दू पुनरूत्थान ने अपनी आत्मचेतन तथा किशोर अवस्था प्राप्त कर ली जिससे प्रखर राष्ट्रवाद का मार्ग विस्तीर्ण हो गया।

'भारत की खोज (The Discovery) में उन्होंने लिखा है कि "तात्विक दृष्टि से राष्ट्रवाद अतीत की उपलब्धियों, परम्पराओं और अनुभवों की सामूहिक स्मृति है। जब कभी कोई संकट आया है, राष्ट्रवादी भावना का उत्थान हुआ है और लोगों ने अपनी प्राचीन परम्पराओं से शक्ति व सांत्वना प्राप्त करने का प्रयत्न किया हैं।"

भारतीय संस्कृति की उच्चतम विशिष्टता है, इसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्व कल्याण की भावना'' का व्याप्त होना। बदलते भारतीय सामाजिक परिवेश को हमारे संतो, सूफियों, कवियों, समाज सुधारको तथा गुरूओं ने अपनी वाणी में समेट कर अभिव्यक्ति दी जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय संस्कृति को सदैव ही नई दिशा मिलती रही। इन संतों में कबीर नाम देव आदि कवियों का विशेष योगदान रहा है। कबीर आदि संतों ने वाह्य आडम्बरों का विरोध करके सुधारात्मक वातावरण सृजित किया और दो विपरीत धर्मो समुदायों को निकट लाने का प्रयास किया। इसी परम्परा में भक्तिकालीन कवियों की वैचारिक प्रविधि भी विकसित हुयी। 'सर्वेभवन्ति भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः की भावना भारतीय साहित्यिक चिन्तन धारा का अजस्र स्रोत रही है।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता विविधता में एकता है विगत तीन हजार वर्षो से भारतीय

संस्कृति बड़ी सफलतापूर्वक शांति रहकर अन्य धर्मो और संस्कृतियों के उत्तम धारणीय तथ्यों को देखती रही है और समय–समय पर सबको अपने अन्दर समाविष्ट भी करती रही है। भारतीय ऋषियों, संतो, कवियों के कारण साहित्य मे भावात्मक एकता एक सहज स्वाभाविक वृत्ति रही है। आदि शंकराचार्य द्वारा देश के चारों कोनों पर चार धर्मपीठों की स्थापना, सप्तपुरी व सप्तनदियों के नामों पर यंत्र रूप में उच्चारण, पंचदोवोपासना, समस्त धर्मावलम्बियों को भी धर्मपालन की स्वतंत्रता, समस्त दार्शनिक सिद्धान्तों की समन्वयशीलता आदि भावात्मक एकता के ही वाह्य विधान है। भारतीय साहित्यकारों में भारतीय संस्कृति को अक्षुण्य बनाये रखने के लिये ऐक्य की आधारशिला रखी और भक्तिकालीन कवियों ने मजबूत नीवं तैयार की। इन लोगों ने निम्न वर्गो को जगाने का काम किया।

निष्कर्ष

भारत में बसने वाली कोई भी जाति इस बात का दावा नहीं कर सकती कि भारत के समस्त मन विचारों पर उसी का अधिकार है। भारत जो आज कुछ है उसकी रचना में भारतीय जनता के प्रत्येक भाग का योगदान है। ''यदि हम इस बुनियादी बात को नहीं समझते तो हम भारत को समझने में असमर्थ रहेंगे और यदि हम भारत को नहीं समझ सकते तो हमारे भाव विचार और काम सब अधूरे रह जायेगें और हम देश की कोई ऐसी सेवा नहीं कर सकेंगे जो प्रभावपूर्ण और ठोस हो''–पं0 जवाहर लाल नेहरू भारतीय संस्कृति विविधता में एकता की परिचायक रही है। भारत विभिन्न क्षेत्रों, प्रजातियों, भाषाओं, जनजातियों, वनस्पतियों, पशुओं विभिन्न धर्मो, परम्पराओं तथा भिन्न जीवन शैली का एक समृद्ध देश रहा है। इसी विविधता से देश की समृद्धि बढ़ती है। पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ने पर क्रमशः सांस्कृतिक विविधता दिखायी पड़ती है किन्तु इस भेद के होते हुये भी भारत की एकता में कभी कमी देखने को नहीं मिली। भौगोलिक विविधता होने के बावजूद यह देश हमारी प्रकृतिक सीमाओं के कारण बंधा हुआ है, हिमालय से लेकर हिन्द महासागर तथा पूर्व में वर्मा की पहाड़ियाँ पश्चिम हिन्दुकुश पर्वत इस राष्ट्र की स्वाभाविक सीमाएं बनाते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण भारत एक अखण्ड देश है और हम सब भारतीय राष्ट्रीयता के नाम पर जब–जब देश के ऊपर कोई भी आपत्ति आये चाहे वे दैविक हो, प्राकृतिक हो या पड़ोसी देशों के आक्रमण के कारण हो हम सभी भारतीय राष्ट्र के नाम पर एक हो जाते है। यही हमारी गंगा–जमुनी संस्कृति की महान और अनोखी विशेषता सदियों से रही है और इसी वजह से हमारे देश की संस्कृति कभी संकट में नहीं आयी, जो भी वाह्य संस्कृति प्रभाव देश पर पड़ा हमने बड़े ही स्वाभाविक रूप से उसे आत्मसात कर लिया। यही हमारी विशिष्टता विरासत और सांस्कृतिक पहचान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *एस0सी0 दूबे – भारतीय समाज*
2. *वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा – भारतीय सामाजिक व्यवस्था (पंचशील प्रकाशन, जयपुर)*
3. *प्रो0 घनश्याम त्रिपाठी –भारतीय समाज (आस्था प्रकाशन जयपुर)*
4. *शिवहाल सिंह – विकास का समाजशास्त्र (रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली)*
5. *अमर कुमार – योगेन्द्र सिंह का समाजशास्त्र*
6. *स0एल0 दोषी, पी0सी0 जैन – भारतीय सामाजिक व्यवस्था।*
7. *पं0 जवाहरलाल नेहरू – डिस्कवरी ऑफ इण्डिया (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली)*